SRI JIN KANTISAGARSURI SMARAK TRUST

tgkt efnj] ekMoyk&343042 ftyk&tkykj jkt- njHkk"k 02973&256107@9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in / jahajmandir99@gmail.com

प्रेस विज्ञप्ति

नवप्रभात

0 पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.

कर्म के आगे व्यक्ति बिचारा है। वह कितना भी बुद्धिमान हो... शक्तिमान हो... चतुर हो... पर कर्मसत्ता के आगे सर्वथा कमजोर है।

होशियार से होशियार व्यक्ति भी धोखा खा जाता है। वह भी वैसा कर बैठता है, जैसा कर्म उससे करवाता है। सच्चाई यह है कि व्यक्ति कर्म के हाथों की कठपुतली है। वह भले ऐसा विचार करे कि यह मैं कर रहा हूँ! व्यक्ति भले कर्त्ता–भाव में जीये, पर हकीकत में वह कर्म के नचाये नाच रहा है। अच्छा भी.. बुरा भी.. कर्म सत्ता ही उससे सब कुछ करवा रही है।

कर्म के स्वरूप को यथार्थ रूप से समझ कर अपने चिंतन को बदलना है। जो व्यक्ति कर्म सिद्धान्त की इस यथार्थ व्याख्या को समझ लेता है, वह व्यक्ति कभी भी किसी को दोषी नहीं मानता। वह केवल और केवल कर्म को दोषी मानता है।

इसलिये वह व्यक्ति उस व्यक्ति से लडाई नहीं करता.. वह कर्म से युद्ध करने का पुरूषार्थ करता है।

एक अखबार हमेशा शराब के विरोध में लेख प्रकाशित करता था। उसका मुख्य संपादक अपनी ऑफिस में अकेला था। वह किसी काम से बाहर जाने के लिये अपनी कुर्सी से खडा हुआ ही था कि एक शराबी आगबबूला होता हुआ अन्दर आया। गालियाँ बरसाता हुआ जोर से चिल्लाया– कहाँ है संपादक!

उसकी आवाज और आक्रोश देख कर संपादक ने कहा– भैया! बैठो! अभी उसे बुलाकर लाता हूँ। यह कहकर वह बाहर गया। वह इस आदमी से बचने के बारे में सोच ही रहा था कि एक शराबी और बाहर से भीतर की ओर आता हुआ उससे टकरा गया। वह भी उसी आवाज में बोला– है कौन इसका संपादक! जो शराब के बारे में ऐसा वैसा लिखता है।

वह धीरे से बोला– अन्दर बैठा है।

अन्दर जो ही दोनों आपस में गुत्थमगुत्था हो गये। दोनों एक दूसरे को संपादक समझ रहे थे। दोनों आपस में एक दूसरे को सजा देकर आनंद का अनुभव कर रहे थे। जबकि संपादक दूर खडा तमाशा देख रहा था।

कर्म उस संपादक की भांति है। जो लडा कर तमाशा देखता है। हमारा असली अपराधी कोई व्यक्ति या परिस्थिति नहीं, कर्मसत्ता है। उस पर विजय प्राप्त करने का पुरूषार्थ करना है। यही धर्म है।

जटाशंकर

0 पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.

जटाशंकर सरकारी अफसर था। था नहीं, पर अपने आपको बहुत ज्यादा बुद्धिमान समझता था। उसके मन मस्तिष्क पर यह सुरूर छाया रहता था कि मुझ से ज्यादा चतुर व्यक्ति इस ऑफिस में दूसरा नहीं है। वह पारिवारिक रिश्तेदारी के हिसाब से जल्दी ही प्रगति के पथ पर चढता हुआ अफसर बन गया था।

उसके अण्डर में काम करने वाला घटाशंकर एक बार उसके पास आया और बोला— सर! स्टोर पूरा भर चुका है। फाईलें बहुत जमा हो गई है। चालीस चालीस साल पुरानी फाईलें पडी है। कभी काम नहीं आती, इसलिये इनका निपटारा हो जाना चाहिये।

जटाशंकर कुछ पलों तक विचार करने के बाद बोला— मैं निरीक्षण करता हूँ, बाद में निर्णय लिया जायेगा।

थोडी देर बाद जटाशंकर उस कक्ष में पहुँचा। फाईलों पर धूल जमी हुई थी। दो चार फाईलों को देखने के बाद लगा कि इनका कोई काम नहीं है।

वह ऑफिस में गया और घटाशंकर को बोला— एक काम करो! ये फाईलें किसी काम की नहीं है। व्यर्थ जगह रोक रही है। नई फाईलों को रखने के लिये स्थान नहीं है। अतः इन समस्त फाईलों को नष्ट कर दो। पर हाँ! एक काम कर लेना। इन्हें नष्ट करने से पहले इन सबकी फोटोकॉपी कर रख लेना। कभी काम आ सकती है।

घटाशंकर का मुँह खुला का खुला रह गया। सारा स्टॉफ जटाशंकर की मूर्खता पर हँसने लगा। जब फाईलों को रखने के लिये जगह नहीं है तो फोटोकॉपी वाली फाईलों को रखने के लिये जगह कहाँ से आयेगी! फिर जब फोटोकॉपी रखनी है तो फाईलों को नष्ट करने की क्या जरूरत है!

io de dk cËku Qkby g vkj mud mn; e cËku oky de QkVkdkih! ge de u"V djuk gA ij lkFk lkFk ;g Hkh Ë;ku j[kuk g fd mudh QkVkdkih u gk ik;A

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

0 पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.

पूज्य गुरुदेवश्री की दीक्षा को ज्यादा समय नहीं बीता था। उम्र लगभग 25 वर्ष की थी। खरतरगच्छ संघ में दीक्षित हुए लगभग 4 साल का समय बीता था। पूज्यश्री का अध्ययन काल चल रहा था।

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी म.सा. ने पूज्यश्री को अध्ययन हेतु जोधपुर रूकने का आदेश दिया था। वे एक जिन मंदिर के नीचे उपाश्रय में बिराजमान थे। सुबह ही सुबह संस्कृत पढाने हेतु एक पंडित प्रवर आते थे। पूज्यश्री उन दिनों एकासणा करते थे। सुबह लगभग तीन घंटे का समय पढाई में बीतता था।

वही समय लोगों के मंदिर आने का था। मंदिर दर्शन करने के बाद श्रावक अपना कर्त्तव्य समझ कर गुरु वंदन हेतु पूज्यश्री के पास आते थे। पूज्यश्री उस समय पढते होते। और श्राविकाऐं वंदन करती।

वंदन करने के बाद मांगलिक सुनाने का निवेदन करती। पढाई के समय मांगलिक सुनाना ठीक तो नहीं लगता। पर संकोच व मर्यादा के कारण मांगलिक सुना देते।

जब यह नित्यक्रम हो गया। तो बहुत समस्या हो गई। पढाई में विक्षेप होने लगा। पूज्यश्री ने समझाया भी कि अभी पढाई चल रही है। मांगलिक सुनाना उचित है। पर पढाई की अपेक्षा से उचित नहीं है।

श्राविकाऐं कहती कि बावजी! बडी नहीं तो छोटी मांगलिक ही सुना दीजिये।

शास्त्रों में लिखा है कि जब कोई साधु स्वाध्याय अथवा प्रतिलेखनादि क्रिया में व्यस्त हो तो उन्हें वंदन नहीं करना चाहिये। वंदन भी अनुज्ञा पूर्वक ही करना चाहिये। पर प्रायः देखा जाता है कि श्रावक श्राविकाओं में मर्यादा व अनुशासन भरे औचित्य का अभाव है। कभी आप किसी कार्य में व्यस्त है, कोई आया है और वंदना की है। व्यस्तता के कारण आपका ध्यान उस ओर नहीं है। आप उसे धर्मलाभ नहीं दे पाये हैं। तो वह पूरे गांव में ढिंढोरा पीटेगा कि महाराज तो हमें धर्मलाभ ही नहीं देते। महाराज तो केवल पैसे वालों को ही धर्मलाभ देते हैं।

पूज्यश्री ने सोचा, अब इसका कोई स्थायी समाधान ढूंढना होगा। मैं कमरा बंद कर बैठ नहीं सकता। गर्मी

का समय है। पढाई भी जरूरी है। मांगलिक का मना भी कर नहीं सकता। आखिर क्या किया जाये! छोटी उम्र थी। उनके मानस में एक विचार आया। और दूसरे दिन से ही क्रियान्वित कर दिया।

पूज्यश्री ने एक बडा सा पन्ना लिया। उस पर बडे अक्षरों में नवकार महामंत्र और अर्हन्तो. की स्तुति, दासानुदासा. की स्तुति लिखकर सर्वमंगल. लिख दिया। उस पन्ने को गत्ते पर चिपका कर उचित जगह पर टांग दिया।

वंदना के बाद जिस ने भी कहा– मांगलिक!

गुरु महाराज ने उस पेपर की ओर इशारा कर कहा– पढ लो!

सब झेंप गये। यह कैसी मांगलिक है। कुछ ने तो पढी भी!

पर दूसरे दिन से लोगों ने मांगलिक निवेदन बंद कर दिया। पूज्यश्री की पढाई आराम से बिना किसी बाधा के आगे बढने लगी।

पूज्यश्री जब यह घटना हमें सुनाते तो अपने बचपन पर मुक्त हास्य बिखेरते।

LokË;k;% ijkorZuk

efu efur iHkklkj

स्वाध्याय साध्क जीवन का प्राण तत्त्व है।

श्वासोच्छ्वास के बिना कोई जीव जीवित रहे तो स्वाध्याय के बिना साध्ु की साध्ना जीवित रहे।

स्वाध्याय, तप के भेदों मे से आभ्यन्तर तप है। परमात्मा महावीर द्वारा प्ररूपित स्वाध्याय के पांच भेदों में से एक है– परावर्तना। इस परावर्तना को सरल शब्दों में पुनरावर्तन भी कहा जा सकता है।

परावर्तना क्या है?

॰ परियटट्टणयाएणं भंते। जीवे कि जणयइ?

भगवन्! परावर्तना से जीव क्या प्राप्त करता है?

॰ परियटट्टणयाएणं वंजणाइं जणयइ वंजाणलद्धिंच उप्पाएइ।

परावर्तन से जीव को व्यंजनात्मकज्ञान की प्राप्त होता है। व्यंजन लब्ध्ि का उपार्जन होता है जिससे जीव स्मृत सूत्र–अर्थ को परिपक्व एवं संपुष्ट करता है तथा अस्मृत सूत्र–अर्थ को कठस्य करता है।

यह परावर्तना स्वाध्याय का महाप्रभाव है जिससे पांच सौ गाथा वाले पुण्डरीक कण्डरीक अध्ययन की प्रतिदिन पांच सौ बार परावर्तन करके तिर्यण्जृंभक ;वैश्रमणद्ध देव अगले भव में वज्रस्वामी बना तथा पलने में झूलते झुलते आचरांग आदि एकादश अंग आगमों को कंठस्थ कर लिया।

परावर्तना के लाभ–

शास्त्रकार फरमाते हैं कि यह परावर्तना का ही महात्म्य है जिस कारण चतुर्दश पूर्वध्र प्रतिदिन चौदह पूर्वों का स्वाध्याय करते हैं। परावर्तना स्वाध्याय से ही मासतुष मुनि ने 'मासतुष मासतुष' बारह वर्ष का रहते रहते केवल ज्ञान प्राप्त कर लिया।

एक पुरानी पर बडी सुहानी कथा है।

एक बार गुरू ने शिष्यों से पूछा रोटी जले अंगार पर, बोल चेला किण व्याय।

सभी शिष्यों की ओर प्रश्न सूचक दृष्टि घुमाते हुए गुरू मुखर हुए–

॰ पान ;पत्ताद्ध क्यों सड़ता है?

॰ घोडा क्यों नहीं चल पाता है?

॰ विद्या क्यों विस्मृत हो जाती है?

॰ रोटी अंगारे पर क्यों जल जाती है?

और हॉ! इन चारों प्रश्नों का उत्तर एक ही होना चाहिये।

प्रश्न अलग–अलग और उत्तर एक? यह कैसे संभव होगा?

एक शिष्य ने उत्तर देते हुए कहा– गुरूदेव! परावर्तना के अभाव के कारण।

विशेष स्पष्ट करण करता हुआ वह शिष्य बोला–

॰ पत्ते को अगर आगे पीछे करते रहे तो सडता नही।

एक तरफ पडा रहे तो वह खराब हो जात है।

॰ अश्व की प्रतिदिन घुमाना जरूरी है। यदि ऐसा न हो तो अश्व की गति समाप्त हो जाती है। वह चल नहीं पाता।

॰ कण्ठस्थ सूत्र और अर्थ का यदि पुनः पुनः स्मरण, परावर्तन न किया जाये तो वह ज्ञान विस्मृति के अंधेरे मे लुप्त हो जाता है।

॰ चौथे प्रश्न का उत्तर यह होगा कि जब कोई गृहिणी रोटी सेकती है तो वह आगे–पीछे करती है। यदि तप्त तवे पर रोटी योंहि पडी रहे, तो वह जलकर राख हो जाती है

जैन इतिहास में एक वृद्धवादी हुए जो वादि देवसूरि के नाम से भी सुप्रसिद्ध है। पहले उनका नाम मुकुंद था। आचार्य स्कंदिल के पास आर्हती प्रव्रज्या ग्रहण कर स्वाध्याय में अनुरक्त बन गये। ज्ञान–प्राप्ति की तीव्र उत्कंठा के कारण दिन में तो भरपूर स्वाध्याय करते ही, रात्रि में भी तीव्र स्वर से अभ्यास करते।

गुरूमहाराज ने कहा–मुनिवर! रात्रि में अन्य साधुओं की निद्रा में बाध तो होती ही है, अन्य हिंसक प्राणियों के जागने से अनर्थ भी होता है, अतः दिन में ही उच्चस्वर से स्वाध्याय किया करो।

वृद्धवादी के स्वाध्याय पर व्यंग्य कसते हुए किसी श्रावक ने कहा–महाराज! आप इस बडी उम्र में भरपूर स्वाध्याय कर रहे हो! मूसल पर फूल उगाना चाहते हो? बात वृद्धवादी के मन को कचोट गयी। इक्कीस दिन तक ब्राह्मी विद्या की साध्ना की जिससे विद्यादेवी प्रसन्न हुई और वरदान दिया–'सर्वविद्या सिद्धो भव!'

वृद्धवादी देवी के सम्मुख चौराहे पर बैठकर धरती पर मूसल रोपकर बोले– अस्मादृशा अपि यदा भारती त्वत्प्र सादतः।

भवेयुर्वादिनां प्राज्ञा मुसलं पुष्यतां ततः।।

दूसरे ही श्रण मूसल पर फूल महक उठे।

श्रावक समझ गये कि निरन्तर लगन और तीव्र पुरूषार्थ कसे सब कुछ संभव है। मूसल फूल ही क्या, आकाश में भी पुष्प खिलाया जा सकता है। इस परावर्तना स्वाध्याय के प्रभाव से वृद्धवादी सूरि जैन शास्त्रों के पारगामी और मूर्धन्य विद्वान आचार्य बने।

परावर्तना के लाभ

॰ घिसते–घिसते अनगढ पाषाण गोल–मृदु बन जाता है।

॰ रहते–रहते मंत्र सिद्धि का वरदान देता है।

॰ सहते–सहते पत्थर भगवान की प्रतिमा बन जाती है।

लेखन, प्रवचन, काव्य, सारी लौकिक–अलौकिक विद्याएँ परावर्तना स्वाध्याय से संभव है।

॰ सूत्र और अर्थ की परावर्तना से हृदय की शुद्धि होती है।

॰ शब्दो च्चारण से इसने न्रिय की शुद्धि होती है।

॰ उच्चारित पाठ के श्रवण से श्रवणेन्द्रिय की शुद्धि होती है।

॰ ज्ञान–पुस्तक के पुनः पुनः दर्शन से चक्षुरिन्द्रय की शुद्धि होती है।

॰ पवित्र सूत्रों के घनत्व से वातावरण एवं काल की शुद्धि होती है।

॰ आत्मा में शुभ–शुद्ध परिणामों के अवतरण से चैतन्य शुद्धि होती है।

यह परावर्तना उच्च कोटि का स्वाध्याय है। सूत्र और अर्थ का पुनरावर्तन करते–करते एक मूर्ख विद्वान तथा अज्ञ महाप्रज्ञ बन जाता है। जितना ज्यादा पुनरावर्तन होता है, ज्ञान उतना ही परिवक्व, शुद्ध, स्पष्ट, संदेहहित तथा स्थिर बनता है। इससे वचन लब्धि एवं पदानुसारिणी लब्धि की भी प्राप्ति होती हैं क्षुतपूर्व ज्ञान भी इवयमेव आत्मा में समुत्पन्न होता है और नये नये क्षुत का महादान देता है।

प्रासंगिकता–

एक व्यापारी का यह अभिप्राय रहता है कि वह कुछ न कुछ नया प्रतिदिन कमाएँ और इसके साथ पूर्वोपर्जित ध न की सुरक्षा करना भी उसका ध्येय रहता है तथा भूलवश पूर्व– प्राप्त ध्न खोजाये तो चिन्तित होता है, इसी प्रकार एक मोक्षलक्षी आत्मा प्रतिदिन नया अर्जित करने के साथ–साथ पूर्व कण्ठस्थ–स्मृत ज्ञान को भी व्यवस्थित बनाये रखता है।

आज के वातावरण में 'आगे–पाठ, पीछे सपाट' की उक्ति चरितार्थ हो रही है। जो बालक बाल्यावस्था में पंच प्रतिक्रमण आदि कंठस्थ करता है, वह कॉलेज एवं व्यापार की जिन्दगी में सब कुछ विस्मृत कर जाता है पर कोई अफसोस भी नहीं होता है।

'संते बले संते वीरिये संते पुरूषाकारपरक्कमें' बल, वीर्य, और शक्ति पराक्रम के होते हुए जो जीव पूर्वोपार्जित पाठों का स्वाध्याय परावर्तना नहीं करता वह ज्ञानावरणीय कर्म का बंध करता है पर इसका अर्थ यह नहीं कि वह सूत्रादि याद ही न करे, इससे तो ओर ज्यादा ज्ञानावरणीय कर्म बांध्ता है तथा आगामी भवों मूर्ख, वाचाल, गूंगा, बहरा, मंदबुद्धि, जडबुद्धि और स्मृति के अभाव में लोक में हँसी, निद्रा और उपहास का पात्र बनता है।

माँ–बाप को चहिये कि स्वयं भी स्वाध्याय में रूचि ले तथा अन्तिम श्वास तक विद्यार्थी बने रहे, इसके साथ अपने

लाल को स्वाध्यायी श्रावक बनाये ताकि वह जीवन के सच्चे लक्ष्य को प्राप्त कर सके।

गुरुदेव की कहानियॉ
शेर शिष्य बन गया

एक सत्य घटना है। इलाहाबाद की त्रिवेणी के पार एक घने जंगल में एक पहुँचे हुए योगीराज रहते थे। अपनी साधना में मस्त, सारी फिक्र छोड़े, अपने ध्यान–योग में..... समाधिा में रमे हुए।

एक बार महात्मा मुंशीराम उन योगीराज के दर्शनार्थ पहुँचे। उनके साथ बहुत से लोग थे। आश्रम में जब पहुँचे तब रात्रि की चादर फैल रही थी। अन्धाकार घना होता जा रहा था। गुफा में टिमटिमाते मिट्‌टी के दीये के शान्त/क्षीण प्रकाश में उन्होंने कोपीनधाारी एक योगी को पद्‌मासन लगाए हुए देखा। उनकी आँखें मूँदी हुई थी। शरीर मानो निश्चेष्ट–सा था।

पर भीतर शांत प्रवाह जारी था।

काफी देर वे बैठे रहे। योगीराज की समाधि जारी थी। रात्रि के तीन बज गये। सभी दर्शनार्थी प्यासे से बैठे थे। पर बिना आशीर्वाद पाये वापस जाना भी उन्हें गवारा नहीं था। वे निर्निमेष योगी को देखे जा रहे थे।

इतने में शेर की गगनभेदी गर्जना उनके कानों से टकराई। सभी दर्शनार्थियों के होश फाख्ता हो गए। उन्होंने सोचा– योगीराज के दर्शन हो ना हो, पर आज वे शेर का भोजन अवश्य बन जायेंगे। सभी आकुल–व्याकुल थे। मस्तिष्क काम नहीं कर रहा था। इतने में उन्होंने मस्ती में झूमते, लम्बे घने केश हिलाते, धीर–गम्भीर चाल में चलते शेर को भीतर आते देखा।

शेर सीधा योगीराज के चरणों में जा लेटा। उनके पैर चाटने लगा।

सारे लोग आश्चर्यचकित हो इस अद्‌भुत दृश्य को देखने लगे। योगीराज समाधि से जागे। शेर पर हाथ फेरा। शेर आशीर्वाद के सुखद बोझ से भर मस्त होकर चला गया।

महात्मा मुंशीराम ने सभी लोगों के साथ नमस्कार किया। अपने भीतर के भावों को प्रकट करते हुए महात्मा ने कहा– योगीराज! यह तो बहुत बड़ा चमत्कार है।

योगीराज ने गम्भीर स्वर में कहा– नहीं, इसमें कोई चमत्कार नहीं। यह प्रेम, अहिंसा, करूणा, मानवता, कृतज्ञता की लहरों का परिणाम है।

योगीराज की आँखें शून्य में टिक गई। उनका मस्तिष्क अतीत की परछाइयों में खो गया। वे एक पुरानी घटना यों सुनाने लगे।

एक बार मैं जंगल में जा रहा था। किसी झाड़ी के निकट मुझे कराहने की मन्द आवाज सुनाई दी। मैंने वहाँ जाकर देखा। एक शेर दर्द से छटपटा रहा था। उसके पाँव में गोली लगी थी। खून बह रहा था। मैं तुरन्त आसपास किसी विशेष वनस्पति की खोज में जुट गया।

अतिशीघ्र किसी औषधि को लेकर वहाँ गया। घाव साफ किया। गोली बाहर निकाली और वनस्पति का लेप कर दिया। उस समय उस शेर की आँखों से टपकता श्रद्धा–भाव, आँखों से टपकती आस्था, आँसू की दो बूंदें, झुका हुआ मस्तक, मुझे आश्चर्यचकित कर गया।

लगातार कई दिनों तक मैंने पट्‌टी बांधी। वह ठीक हो गया। परन्तु वह मुझे न भूल सका।

वह प्रतिदिन मेरे पास आता है, अपनी आस्था के दो फूल चढ़ाता है, और चला जाता है। क्या हम इस प्रकार की कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं?

उपकारी के उपकार को न भूलने वाला वह शेर वास्तव में अभिनंदनीय है। क्या हम उस शेर की मानवता से कोई शिक्षा ग्रहण करेंगे?

कोयम्बतूर में मंदिर दादावाडी की प्रतिष्ठा संपन्न

तमिलनाडु के कोयम्बतूर नगर में श्री विजयराजजी सौ. पारसमणि देवी पुत्र कुशलराज झाबक परिवार द्वारा स्वद्रव्य से निर्मित श्री स्तंभन पार्श्वनाथ जिन मंदिर एवं श्री जिनदत्तसूरि दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. एवं पूजनीया महत्तरा साध्वी श्री मनोहरश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म. सुमित्राश्रीजी म.

प्रियमित्राश्रीजी म. मधुस्मिताश्रीजी म. एवं पूजनीया महत्तरा श्री चंपाश्रीजी म. जितेन्द्रश्रीजी म. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. विश्वरत्नाश्रीजी म. रश्मिरेखाश्रीजी म. चारूलताश्रीजी म. मयूरप्रियाश्रीजी म. चारित्रप्रियाश्रीजी म. तत्वज्ञलताश्रीजी म. संयमलताश्रीजी म. आदि के पावन सानिध्य में परम भक्ति भावना के वातावरण में संपन्न हुई।

प्रतिष्ठा महोत्सव का प्रारंभ ता. 29 जनवरी को कुंभ स्थापना से हुआ। ता. 30 को पूज्यश्री मंगल प्रवेश हुआ। च्यवन कल्याणक आदि विधान संपन्न किये गये।

शास्त्रीय आधार पर समस्त कल्याणकों के विधान मंदिरजी में ही किये गये। ता. 1 फरवरी को भव्य वरघोडा संपन्न हुआ। ता. 2 फरवरी को मंगल मुहूर्त्त में परमात्मा स्तंभन पार्श्वनाथ, दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि, नाकोडा भैरव, घंटाकर्ण महावीर, श्री अंबिका देवी, श्री सरस्वती देवी, श्री काला गोरा भैरव, श्री पार्श्व यक्ष एवं श्री पद्मावती देवी की प्रतिष्ठा की गई। इस प्रतिष्ठा महोत्सव की यह विशिष्टता रही कि किसी भी प्रकार की कोई बोली नहीं बोली गई।

जैसलमेर के पीत पाषाण में उत्तम कोरणी युक्त इस जिन मंदिर में केवल पार्श्वनाथ परमात्मा की एक ही खडी विशाल प्रतिमा बिराजमान की गई। दादावाडी में ध्यान–मुद्रा में दादा जिनदत्तसूरि की मनोहारी प्रतिमा बिराजमान की गई। परमात्मा व गुरुदेव की केवल एक एक प्रतिमा ही बिराजमान की गई।

जिन मंदिर के पास ही दादावाडी का निर्माण हुआ है। इस मंदिर दादावाडी में 10 हजार से अधिक घन फीट पाषाण लगा। इसका निर्माण मात्र चार महिने में किया गया। श्री विजयराजजी सौ. पारसमणि देवी, पुत्र कुशलराज, जामाता संजयजी गुलेच्छा ने इस मंदिर दादावाडी के निर्माण में रात दिन एक किया। पूज्यश्री ने स्फटिक रत्न मय दादा गुरुदेव की दिव्य प्रतिमा श्री झाबकजी को साधना के लिये भेंट की। बाहर से बडी संख्या में अतिथियों का आगमन हुआ। झाबक परिवार ने स्वद्रव्य से जिनमंदिर व दादावाडी का निर्माण किया व प्रतिष्ठा का पूरा लाभ लिया।

ता. 3 फरवरी को द्वारोद्घाटन हुआ। दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई।

कन्याकुमारी में ऐतिहासिक प्रतिष्ठा संपन्न

भारत के दक्षिणी अन्तिम छोर पर स्थित पर्यटन स्थल श्री कन्याकुमारी नगर में परमात्मा श्री महावीर स्वामी का जिन मंदिर, श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी एवं श्री राजेन्द्रसूरि गुरु मंदिर का अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव मरूधर मणि उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री अध्यात्मप्रभसागरजी म. ठाणा 3 एवं पूजनीया महत्तरा श्री चंपाश्रीजी म.सा. जितेन्द्रश्रीजी म. की शिष्या पूजनीया धवलयशस्वी साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. पू. श्री विश्वरत्नाश्रीजी म. पू. श्री रश्मिरेखाश्रीजी म. पू. श्री चारूलताश्रीजी म. पू. श्री चारित्रप्रियाश्रीजी म. ठाणा 5 एवं पूजनीया खान्देश शिरोमणि साध्वी श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म. पू. श्री विश्वज्योतिश्रीजी म. पू. श्री जिनज्योतिश्रीजी म. ठाणा 3 की पावन सानिध्यता में अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ।

प्रतिष्ठा महोत्सव का प्रारंभ ता. 24 फरवरी 2015 को कुंभस्थापना के साथ हुआ। ता. 26 को भव्य शोभायात्रा का आयोजन हुआ। ता. 27 को परमात्मा की प्रतिष्ठा शुभ मुहूर्त्त में संपन्न हुई।

संगीतकार श्री नरेन्द्र वाणीगोता ने भक्ति भावना का अनूठा माहौल उपस्थित किया। युवा संगीतकार रायपुर निवासी अंकित लोढा ने भक्ति का रंग जमाया। विधिकारक श्री अश्विन भाई बैंगलोर ने शुद्धता के साथ विधि विधान कराया।

प्रतिष्ठा महोत्सव को सफल बनाने में ट्रस्टीगणों के साथ नागरकोइल संघ, तिरूनेलवेली संघ व मदुराई संघ का विशेष योगदान रहा। साथ ही इन संघों के विविध मंडलों ने पूरी सेवाऐं अर्पण की। पूज्यश्री आदि साधु साध्वियों के विहार की वैयावच्च में इन तीनों संघों के साथ साथ चेन्नई निवासी श्री प्रकाशजी लोढा की सेवाऐं अत्यन्त अनुमोदनीय रही। वे 11 फरवरी से निरन्तर विहार में साथ रहे।

मुख्य ध्वजा का लाभ संघवी श्री शांतिदेवी पुखराजजी तेजराजजी गुलेच्छा परिवार मोकलसर निवासी ने

लिया। मूलनायक परमात्मा श्री महावीर स्वामी को बिराजमान का लाभ श्री मोहनचंदजी प्रदीपकुमारजी ढड्ढा परिवार ने लिया। शिखर पर कलश का लाभ गोल–तिरूवनवेली निवासी श्री जीतमलजी तलावट परिवार ने लिया।

दादावाडी की ध्वजा का लाभ श्री हीराचंदजी बबलासा. जिनराजजी गुलेच्छा परिवार बीकानेर टिन्डीवनम् वालों ने लिया। जबकि कलश का लाभ श्री भंवरलालजी विरधीचंदजी छाजेड परिवार बाडमेर मुंबई वालों ने लिया। दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि को बिराजमान का लाभ संघवी शा. पारसमलजी चौथमलजी वंसराजजी अशोककुमारजी भंसाली परिवार सिवाना वालों ने लिया।

श्री राजेन्द्रसूरि गुरु मंदिर की ध्वजा एवं मुख्य कलश का लाभ श्री बगदावरमलजी हरण परिवार भीनमाल वालों ने लिया। एवं बिराजमान का लाभ श्री मांगीलालजी हरकचंदजी आलासन वालों ने लिया।

श्री नाकोडा भैरव को बिराजमान का लाभ गोल– उम्मेदाबाद– मदुराई निवासी श्री भंवरलालजी भंसाली परिवार भैरू लाइट हाउस ने लिया। श्री अंबिका देवी को बिराजमान का लाभ श्री भीमराजजी शंकरलालजी बागरेचा आहोर–चेन्नई वालों ने लिया।

प्रतिष्ठा के बाद पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री एवं साध्वीजी म. को कामली ओढाई गई। कामली का लाभ श्री मोहनचंदजी प्रदीपकुमारजी ढड्ढा परिवार ने लिया। जबकि गुरु पूजन का लाभ श्री जवाहरलालजी देशरला परिवार ने लिया।

प्रतिष्ठा के पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. ने जीवन की मूल्यवत्ता का वर्णन किया।

इस अवसर पर श्री जैन तीर्थ संस्थान द्वारा श्री मोहनचंदजी ढड्ढा का भावभीना अभिनंदन किया गया। साथ ही समय और अपनी क्षमताओं का पूरा भोग देने वाले श्री राजेश गुलेच्छा का बहुमान किया गया।

इस अवसर पर पूज्यश्री ने कहा– श्री मोहनचंदजी हमारे समाज के सबसे युवा व्यक्तित्व है। उनकी कार्यशैली अनूठी है। कोडैकनाल, रामदेवरा में जिन मंदिरों का निर्माण और उसी कडी में कन्याकुमारी में मंदिर निर्माण आपकी कर्तत्व शक्ति का उदाहरण है।

कन्याकुमारी में प्रारंभ में अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थितियाँ होने पर भी आपने दृढता के साथ उन पर विजय प्राप्त करके इस निर्माण को पूर्ण किया।

इस अवसर पर देश के कोने कोने से संघ व श्रद्धालुओं का आगमन हुआ। हर व्यक्ति ने आवास व भोजन आदि की सुव्यवस्थाओं की भूरि भूरि अनुमोदना की।

इतिहास

श्री जैन तीर्थ संस्थान ;रामदेवराद्ध, चेन्नई के तत्वावधान में इस मंदिर का निर्माण हुआ है।। मंदिर का निर्माण मात्र 6–7 महिने में संपन्न हुआ।

यहाँ जिन मंदिर बने, ऐसा भाव वर्षों से कई संघ, साधु साध्वीजी भगवंतों का था। श्री कन्याकुमारी जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, मदुरै के मेनेजिंग ट्रस्टी श्री बगदावरमलजी हरण के माध्यम से यह विशाल भूखण्ड ट्रस्ट को प्राप्त हुआ। भूखण्ड प्राप्ति के प्रयास में मोकलसर निवासी श्री सुरेशकुमारजी श्रीमाल मदुरै वालों का पूर्ण सहयोग रहा।

सरकारी समस्याओं के निराकरण में चेन्नई माइनोरिटी कमीशन के माननीय सदस्य, उदीयमान युवा व्यक्तित्व श्री सुधीरकुमारजी लोढा के अथक प्रयास रहे।

इस भूखण्ड पर आराधना भवन, धर्मशाला, भोजनशाला आदि का प्रारंभ 10 जुलाई 2013 को किया गया। जिन मंदिर का शिलान्यास ता. 14 मार्च 2014 को किया गया। शिलान्यास के बाद परिस्थितियों के कारण कुछ समय श्कार्य नहीं हो पाया। उसके बाद लगातार कार्य चला। चेन्नई निवासी श्री राजेशजी गुलेच्छा ने इसके लिये अथक प्रयास किये। फलस्वरूप जिन मंदिर का कार्य शीघ्र ही पूर्ण हो पाया।

नागपुर का प्रभावशाली प्रवास

परम पूजनीया आगम ज्योति स्व. प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की सुशिष्या पूजनीया माताजी म. साध्वी श्री

रतनमाला श्रीजी म.सा. पूजनीया बहिन म. साध्वी डॉ. श्री विद्युत्प्रभा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 11 की पावन निश्रा में 9 फरवरी 2015 को महाराष्ट्र के प्रमुख शहर नागपुर नगर में इन्दोरा दादावाडी का ध्वजारोहण समारोह अत्यन्त आनंद एवं उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

ध्वजारोहण समारोह में अपनी निश्रा प्रदान करने के लिये पूज्यवर्या श्री बहिन म.सा. अपने साध्वी मंडल के साथ वर्द्धमान नगर से प्रातः विहार करके 8:00 बजे कमाल चौक में देव ज्वेलर्स इन्दोरा पधरे। जहाँ से वरघोडे के साथ दादावाडी में पदार्पण हुआ। रिमझिम फुहारों से पुलकित वातावरण में सतरह भेदी पूजा पढायी गयी। ध्वज पूजा के संगान के साथ अलौकिक पार्श्वनाथ, दादा श्री जिनकुशलसूरि गुरूदेव एवं घंटाकर्ण महावीर की ध्वजा का विजय मुहूर्त्त में आरोहण किया गया, जिसका लाभ क्रमशः श्रीमति शांति देवी उपेकचंदजी कोठारी, प्रेमचंदजी राकेश कुमार जी कोठारी, फतेहचंदजी देवेन्द्र कुमारजी कोठारी ने लिया।

ध्वजारोहण से पूर्व नवकारशी एवं दोपहर में स्वामिवात्सल्य का लाभ भी ध्वजा के लाभार्थी परिवार ने ही लिया।

इसी क्रम में 10 फरवरी को पारडी–नागपुर में जिनालय एवं दादावाडी का ध्वजारोहण भी पूज्यवर्या की निश्रा में सम्पन्न हुआ, जिसमें वर्द्धमान स्वामी की ध्वजा का लाभ निर्मला देवी ताराचंदजी कोठारी एवं दादागुरूदेव की ध्वजा का लाभ विरधीचंदजी प्रकाशचंदजी चौरडिया परिवार ने लिया। पारडी के इस समारोह में पू. प्रशमरति विजयजी म. ने भी सान्निध्यता प्रदान की।

ज्ञातव्य है कि पू. बहिन म.सा. का 28 जनवरी को रामदास पेठ से नागपुर प्रवास प्रारंभ हुआ था, जो इतवारी, वर्द्धमान नगर, छावनी आदि में विशिष्ट प्रभावी प्रवचनों की श्रृंखला के साथ पारडी ध्वजारोहण करवाते हुए संपूर्ण हुआ।

पूज्यवर्या श्री बहिन म.सा. के दार्शनिक एवं आध्यात्मिक प्रवचनों की नागपुर में खूब चर्चा रही।

इस प्रवास को सफल एवं स्मरणीय बनाने में संघ अध्यक्ष प्रभातजी धडीवाल, इन्द्रचंदजी सावनसुखा, आसारामजी नाहटा, सुरेशजी पारख, नथमलजी कोठारी, प्रेमचंदजी कोठारी, देवेन्द्रजी कोठारी, अशोकजी कोचर, रूपेशजी गुलेच्छा, घनश्यामजी कोचर, राजेशजी नाहटा, विनोदजी कोठारी, फुलजी कोठारी, किशोरजी कोठारी, विजयजी धडीवाल, राकेश कोठारी आदि का अनुमोदनीय सहयोग रहा।

पूज्याश्री नागपुर से विहार कर 23 फरवरी तक कैवल्यधम, रायपुर पधरेंगे, जहाँ 10 दिवस की स्थिरता के पश्चात् छत्तीसगढ में विचरण करेंगे।

प्रेषक : दीपिका ज्ञण्पालरेचा

पेढी की जनरल बैठक संपन्न

श्री जिनदत्त–कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी की आम बैठक ता. 27 फरवरी को पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में कन्याकुमारी में पेढी के अध्यक्ष माननीय श्री मोहनचंदजी ढड्ढा की अध्यक्षता में संपन्न हुई। जिसमें वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। बैठक में बडी संख्या में माननीय सदस्य उपस्थित थे।

इस अवसर पर द्वितीय दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरि की जन्मभूमि विक्रमपुर, चतुर्थ दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरि की जन्म भूमि खेतासर में दादावाडी बनाने का निश्चय किया गया।

भडगतिया परिवार द्वारा मेडता सिटी की प्राचीन दादावाडी के जीर्णोद्धार हेतु संघवी श्री विजयराजजी डोसी को उत्तरदायित्व सौंपा गया।

पेढी का लोगो तय किया गया। दादावाडियों के जीर्णोद्धार हेतु आये निवेदन पत्रों पर विचार किया गया॥ उनके द्वारा पूरी जानकारी प्राप्त करके राशि भेजने का निर्णय किया गया।

चातुर्मास निर्णय

पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. आदि ठाणा	रायपुर
पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म. आदि ठाणा	पालीताना
पू. साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	रतलाम
पू. साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.	सिवाना
पू. साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	हॉस्पेट
पू. साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म.	बाडमेर

पू. माताजी म. साध्वी श्री रतनमालाश्रीजी म.सा.	
पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	रायपुर
पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	चेन्नई धर्मनाथ मंदिर
पू. साध्वी श्री सुरंजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	सूरत
पू. साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	बैंगलोर
पू. साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म.	चेन्नई वडपलनी
पू. साध्वी श्री लयस्मिताश्रीजी म.	सांचोर
पू. साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	मुंबई
पू. साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	कटंगी
पू. साध्वी श्री विराग–विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	चेन्नई धोबीपेठ
पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	अंजार कच्छ
पू. साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	गांधीधाम
पू. साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म.	उदयपुर
पू. साध्वी श्री सुरेखाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	इन्दौर
पू. साध्वी श्री स्नेहयशाश्रीजी म.	जोधपुर
पू. साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म.	भुज

साधु साध्वी समाचार

0 पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक बकेला तीर्थोद्धारक मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म.सा. जैसलमेर होते हुए ब्रह्मसर पधारे। जैसलमेर संघ ने उनका नगर प्रवेश ठाट से करवाया। तत्पश्चात् ब्रह्मसर मंदिर व दादावाडी में फाल्गुन वदि 30 को मेले का भव्य आयोजन संपन्न हुआ। इस अवसर पर बाहर से हजारों की संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे। मंदिर, दादावाडी की वर्षगांठ मनाई गई। पूज्यश्री होली के पश्चात् विहार कर आगोलाइ पधारेंगे। जहाँ उनकी पावन निश्रा में वासुपूज्य जिन मंदिर की प्रथम वर्षगांठ वैशाख वदि एकम मनाई जायेगी।

0 पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. मनीषप्रभसागरजी म. फलोदी प्रतिष्ठा संपन्न करवाकर विहार कर बाडमेर पधारे। जहाँ उनकी निश्रा में फाल्गुन सुदि 5 को कल्याणपुरा पार्श्वनाथ प्रभु के मंदिर की प्रथम वर्षगांठ मनाई गई। ध्वजा चढाई गई। वहाँ से पूज्यश्री विहार कर सनावडा, बाछडाउ होते हुए धोरीमन्ना पधारे हैं। वहाँ से सांचोर होते हुए कच्छ की ओर विहार करेंगे।

0 पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म. मेहुलप्रभसागरजी म. सा. अध्ययन हेतु पालीताना श्री जिन हरि विहार धर्मशाला में बिराजमान है।

0 पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. समयप्रभसागरजी म. श्रेयांसप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा में श्री विमलनाथ जिन मंदिर दादावाडी में एक देवकुलिका में दादा गुरूदेव श्री जिनकुशलसूरि की प्रतिष्ठा 2 मार्च को संपन्न हुई। वहाँ से 3 मार्च को विहार किया है। वे अम्बूर तिन्नपट्टी पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में ता. 12 मार्च को प्रतिष्ठा संपन्न होगी। वहाँ से पूज्यश्री चेन्नई की ओर विहार करेंगे।

0 पूजनीया मरूधर ज्योति साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा कैवल्यधाम बिराज रहे हैं। लगभग 9 मार्च के पश्चात् मध्यप्रदेश की ओर विहार करेंगे।

0 पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा ता. 2 मार्च तक विजयवाडा पधार गये हैं। यहाँ से विहार कर काकटूर तीर्थ पधारेंगे, जहाँ चैत्र मास की नवपदजी की ओली की आराधना करायेंगे। वहाँ से चेन्नई की ओर विहार करेंगे।

0 पूजनीया मारवाड ज्योति साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा गदग विराज रहे हैं। पूजनीया श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. के पथरी की शल्य चिकित्सा होगी।

0 पूजनीया महातपस्वी साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा जयपुर बिराज रहे हैं। होली पश्चात् अजमेर, ब्यावर, जोधपुर होते हुए फलोदी पधारेंगे।

0 पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा., पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. ठाणा कैवल्यधाम बिराज रहे हैं।

0 पूजनीया धवल यशस्वी साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 5 कन्याकुमारी से विहार कर नागरकोइल, तिरूनेलवेली होते हुए 14 मार्च तक मदुराई पधारेंगे।

0 पूजनीया साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म. सुमित्राश्रीजी म.सा. ठाणा 4 कोयम्बतूर से विहार कर तिरूपुर, ईरोड, सेलम पधारे हैं। अम्बूर के पास तिन्नपट्टी में 12 मार्च को होने वाली प्रतिष्ठा में अपनी सानिध्यता प्रदान करेंगे।

0 पूजनीया साध्वी डॉ. श्री सौम्यगुणाश्रीजी म.सा. ठाणा 4 ने श्री नाकोडाजी से 28 फरवरी को जयपुर की ओर विहार किया है।

0 पूजनीया साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म.सा. विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. ठाणा 3 कन्याकुमारी प्रतिष्ठा पर पधारे। वहाँ से विहार कर नागरकोइल, तिरूनेलवेली होते हुए 14 मार्च तक मदुराई पधारेंगे।

0 पूजनीया साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म.सा. ठाणा 7 की पावन निश्रा में होसापेटे एम. जे. नगर में दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिजी म. की 682वीं पुण्यतिथि का भव्य आयोजन किया गया। वहाँ से विहार कर हम्पी होते हुए हगरीबोम्मन हल्ली पधारे हैं। होली के पश्चात् विहार कर कोट्टूर, चित्रदुर्गा, दावणगेरे पधारेंगे।

0 पूजनीया साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 की पावन निश्रा में बैंगलोर नगर में तृतीय दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि की पुण्यतिथि का आयोजन संपन्न हुआ। बैंगलोर से ता. 19 फरवरी को विहार किया है। वे ता. 4 मार्च तक अनंतपुर पधारेंगे। 4–5 दिनों की स्थिरता के पश्चात् वहाँ से बल्लारी, गंगावती, हुबली होते हुए मुंबई की ओर विहार करेंगे।

0 पूजनीया साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म.सा. दीपमालाश्रीजी म. जोधपुर से विहार कर भोपालगढ होते हुए आसोत्रा पधारे हैं।

0 पूजनीया साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म.सा. ठाणा 3 पार्श्वमणि तीर्थ बिराज रहे हैं।

0 पूजनीया साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म. ठाणा 3 तिरूपातूर पधार गये हैं। वहाँ से विहार कर अम्बूर के पास तिन्नपट्टी में 12 मार्च को होने वाली प्रतिष्ठा में अपनी सानिध्यता प्रदान करेंगे। वहाँ से तिरूपातूर पधारेंगे, जहाँ उनकी प्रेरणा से होने वाले सामूहिक वर्षीतप के प्रत्याख्यान 14 मार्च को करवायेंगे।

पूज्यश्री का कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि का कन्याकुमारी से ता. 2 मार्च 2015 को विहार हुआ। वे विहार कर ता. 3 को नागरकोइल पधारे। वहॉ से विहार कर ता. 7 मार्च को तिरूनेलवेली में पधारेंगे। जहॉ श्रीमती मोवनदेवी छगनलालजी भंसाली परिवार द्वारा निर्मित श्री मनमोहन पार्श्वनाथ ज्ञान ध्यान मंदिर का उद्घाटन होगा। साथ ही उसमें नवपद पट्ट एवं दादा गुरुदेवश्री जिनकुशलसूरि व नाकोडा भैरव की प्रतिमा बिराजमान की जायेगी।

वहॉ से विहार कर पूज्यश्री ता. 14 मार्च को मदुराई पधारेंगे। जहॉ उनकी निश्रा में श्री चंदनमलजी परिवार द्वारा निर्मित गृह मंदिर में श्री विमलनाथ प्रभु की प्रतिष्ठा होगी तथा आराधना भवन के चढावे बोले जायेंगे। दो तीन दिनों की स्थिरता के पश्चात् पूज्यश्री तिरूच्चिरापल्ली, टिण्डीवनम् होते हुए चेन्नई की ओर विहार करेंगे। अप्रेल के दूसरे सप्ताह के प्रारंभ में चेन्नई पधारने की संभावना है।

प्रेषक
जहाज मंदिर कार्यालय